International Journal of Applied Research 2021; 7(2): 94-96

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(2): 94-96
www.allresearchjournal.com
Received: 19-12-2020
Accepted: 21-01-2021

डॉ. अनिरूद्ध वर्मा
पी–एच.डी. (भूगोल), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अनिरूद्ध वर्मा
पी–एच.डी. (भूगोल), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

छतरपुर जिले में जल संसाधन वितरण, उपयोग तथा संभावनाएँ

डॉ. अनिरूद्ध वर्मा

सारांश
पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र के विकास के भौतिक घटकों में जल की महत्वपूर्ण भूमिका होता है, किन्तु कभी–कभी इसका दुरूपयोग किया जाने लगता है जिससे जल संकट उत्पन्न हो जाता है। जल के बिना किसी, प्राणी की कम कल्पना नहीं कर सकते है, छतरपुर जिले में बड़ी दो नदियों के होते हुए भी जल धाराओं के क्षेत्र में निर्धन है, प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों तथा अपनी केन्द्रीय स्थिति के कारण इसमें विकास की अनुकूलतम् संभावनाओं से निहित है जिनके बल पर यह निकट भविश्य में अपनी लगभग 17 लाख आत्माओं के लिए नवीन क्षितिजों का अनावरण करने में सहज ही समर्थ हो सकता है।

कुटशब्दः छतरपुर जिला, जल संसाधन वितरण, उपयोग

प्रस्तावना
जल एक अमूल्य संसाधन है[1] जो पृथ्वी पर पाये जाने वाले जैव विविधता तथा सम्पूर्ण जीवन के लिए आवश्यक है जीवनोपयोगी यह तत्व जब आवश्यक मात्रा एवं मानव गुणवत्ता में उपलब्ध नहीं हो पाता तो पृथ्वी पर पाये जाने वाले जीवों में प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।[2] प्रायः यह देखा गया कि दुनिया के विभिन्न देशों में इसके कालिक एवं स्थानिक वितरण में विभिन्नताएँ मिलती है। कहीं वर्षों जल की मात्रा अत्याधिक तथा कही कम होती है जो आये दिन बाढ़ एवं सूखा जैसे प्राकृतिक प्रकोपों का कारण बनती है। इसी प्रकार यदि मानक स्तर से कम गुणवत्ता वाला जल उपलब्ध होता है तो विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ प्राकृतिक प्रकोप के रूप में दृष्टिगोचर होने लगता है किसी भी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को प्राभावित करने वाले कारकों में जलधाराये ही कम महत्वपूर्ण नहीं होती सदा बहने वाली पर्याप्त जलयुक्त नदियाँ जहाँ उस क्षेत्र को धन धान्य से आपूर्ति करने में अपना अपेक्षित सहयोग देते हैं यही कारा है कि मानव इतिहास के प्रारंभिक काल से ही मनुष्यों ने अन्य स्थानों मे बसने से पूर्व नदी घटियों की ही प्राथमिकता प्रदान की है इनके किनारे में मनुष्यों ने रहना पसन्द किया है। छतरपुर जिले की नदियों की संख्या तो पर्याप्त है पर उनमें से केन एवं धसान नदी ही ऐसी दो नदियाँ है जो वर्ष भर बहती है केन नदी इस जिले की सबसे लम्बी नहीं है इस जिले की अन्य नदियों में कुटनी, लाहौरी, बेसकार, काठन, केसियारी, बाबरी आदि प्रमुख है।[3] इधर कृषि के क्षेत्र में विलुप्त उत्पादन के स्वप्न को सरकार करने के तथा जिले के कृषकों को आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न बनाने के उद्देश्य से राज्य के वर्तमान प्रशासन ने इस जिले के लिए उर्मिल दांयी तट नहर योजना, बरियापुर बायी तट नहर योजना उसी नवीन संकल्पनाओं के संभावित निर्माण की दिशा में जो प्रयास किये गये है उससे इस अंचल के विकास के नये सोपनो की रचना होगी इसमें संदेह नहीं है।

क्षेत्रीय पृष्ठभूमि
विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल खजुराहों को अपने आगोस में समेटे तथा बुन्देलावीर छात्रसाल की कीर्ति पताका फहराता हुआ यह छतरपुर जिला भारत के मध्य में स्थित है, इसके उत्तर में झांसी, हमीरपुर एवं बांदा जो तीनों उत्तर प्रदेश के जिले है दक्षिण में सागर एवं दमोह पूर्व में पन्ना तथा पश्चिम में टीकमगढ़ जिलों से घिरा हुआ है।

मध्यप्रदेशीय बुन्देलखण्ड अपलैण्ड के उत्तर–मध्य भाग में छतरपुर जिला 24°6′ उत्तरी अक्षांश से 25°20′ उत्तरी अक्षांश तथा 78°59′ पूर्वी देशान्तर से 80°26′ पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है। छतरपुर जिला समुद्र तल से लगभग 1000 से लेकर 1200 फीट तक की ऊँचाई पर स्थित है इस जिले का क्षेत्रफल 8687 वर्ग कि.मी.है। केन तथा धसान नदियाँ इस जिले की पूर्वी तथा पश्चिमी सीमा निर्धारित करती है। छतरपुर जिला संसाधन व विकास की अपार संभावनाएँ संजोये है जिले के पूर्व में केन नदी व पश्चिम में धसान नदी बहती है जिससे जल संसाधन की दृष्टि से सम्पन्न कहा

जा सकता है। छतरपुर जिले के पूर्व से पश्चिम तक चौड़ाई लगभग 142.8 कि.मी. है तथा उत्तर से दक्षिण की लम्बाई 1388. 24 कि.मी. है जिले का उत्तरी भाग मैदानी और खेती के लिये उपयुक्त है ये लौड़ी तहसील के तहत आता है इस भाग में केन तथा उसकी सहायक नदियों ने अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

उद्देश्य

जल संसाधन वर्तमान ज्वलंत मुद्दों में से एक है, मनुष्य एवंज ल संसाधन का अटूट सम्बन्ध है मानव सभ्यता का विकास नदियों, घटियों में मिलना जल संसाधन की उपलब्धता का परिणाम था। परिस्थितिकी संतुलन नियमों के अनुसार यदि तंत्र में अस्वाभाविक वृद्धि होती है तो उससे जुड़े दूसरे तत्व में आशातीत ह्रांस भी होगा। छतरपुर जिले की जनसंख्या तीव्रतर वृद्धि के कारण जल संसाधनों के अंधाधुन्ध दोहन ने परिस्थितिकी तंत्र के वाहकों की काफी प्रभावित किया है, जिले की अधिकांश जनसंख्या (77.35 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है जल संसाधन का अत्याधिक उपयोग से जल स्तर कम होता जा रहा है, यदि छतरपुर में जल संसाधन व विकास को बनाये रखना है तो जल संरक्षण करना अति आवश्यक है, छतरपुर जिले में मध्य जून से हवाएँ उत्तरी भाग से पूर्व की ओर से तथा दक्षिणी भाग में पश्चिम की ओर से चलने लगती है जिससे जिले से वर्ष शुरू हो जाती है।

छतरपुर जिले का जल संसाधन सामान्य परिचय

सन् 1948 में छतरपुर जिले का निर्माण हुआ तो यहाँ सिंचाई के संदर्भ में एक अत्यन्त निराशाजनक चित्र प्रस्तुत करता था। कालांतर में जब भारत में नियोजित आर्थिक विकास का युग का सूत्रपात हुआ और भारतीय कृषि को एक सबल आधार प्रदान करने के उद्देष्य से प्रथम पंचवर्षीय योजना में सिंचाई को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया इसका परिणाम ये हुआ कि 1973–74 ई. में जिले का कुछ सिंचित क्षेत्रफल हेक्टेयर हो गया जबकि 1960–61 में वह केवल 41.42 हेक्टेयर ही था इसके अलावा छतरपुर जिले में कई जलाशय है जो कि इस प्रकार है जगत, सागर, धुबेला तालरनगवां, बेनीगंज बाँध, बूढ़ा बाँध, खोपताल आदि छतरपुर जिले शहरी क्षेत्र में ही किशोर सागर, रानी तलैया, रावसागर तालाब आदि है जो शहरी क्षेत्र में चारों ओर से घेरा है।

मानचित्र क्र. 1 : जिला छतरपुर : सिंचाई साधन

छतरपुर में जल का उपयोग व वितरण

यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि चतुर्थ पंचवर्षीय योजना की अवधि में छतरपुर जिले की जो सिंचाई परियोजनाएँ स्वीकृति हुई थी उनके पूर्ण होने पर जिले की 548–45 एकड़ भूमि में सिंचाई सुविधाएँ उपलब्ध होनी थी और इसी पांचवी पंचवर्षीय योजनाओं का प्रस्ताव किया गया था कि जिले में लगभग 50.00 एकड़ भूमि में अतिरिक्त सिंचाई क्षमता उपलब्धता होनी थी। परन्तु सन् 1984–85 के सितम्बर माह के अन्त तक जिले में यह शुद्ध सिंचित क्षेत्र लगभग 93.778 हेक्टेयर होने की संभावना थी किसी भी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाले कारकों में जलधाराओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है।[4] जल ही जीवन है यही कारण है कि मानव इतिहास के प्रारंभिक काल से ही मनुष्यों ने अन्य स्थनों में बसने से पूर्व नदी घटियों को ही प्राथमिकता प्रदान की है। जिला छतरपुर नदियों की संख्या तो पर्याप्त है पर उनमें से केन नदी एवं धसान नदी दो ऐसी नदियाँ है जो वर्ष भर बहती है।[5] केन नदी छतरपुर जिले के सबसे लम्बी नदी है और छोटी नदियाँ है जैसे उर्मिल नदी, कथिन, लाहौरी, बेसकार, कुटनी, बिछवाहिया, बरासने, तरपेट, श्यामरी बन्नों, कठान, केसियारी, बाबरी, बराने आदि नदी पाई जाती है ये छोटी नदियों में सिर्फ वर्षा ऋतु में बहती है।[6]

वर्तमान में छतरपुर जिले सिंचाई के साधन एवं शुद्ध सिंचित क्षेत्र इस प्रकार है–

सारणी क्र. 1: छतरपुर जिले में सिंचाई के साधन

जिला/तहसील विकासखण्ड वर्ष		2014–15	2015–16	2016–17
न्हरे शास./निजी	संख्या	70	106	2
	सिंचित	28831	26241	15082
नलकूप	संख्या	3985	5689	5475
	सिंचित	14867	29341	27341
कुएँ	संख्या	89477	91533	9100
	सिंचित	196849	147283	147001
तालाब	संख्या	185	190	78
	सिंचित	4552	3538	21067
अन्य स्त्रोतों से सिंचित क्षेत्र		27092	23505	...
एक बार से अधिक सिंचित क्षेत्र		194497	196578	36581
कुल सकल सिंचित क्षेत्र		285096	279145	36581

स्त्रोतः जिला सांख्यिकी पुस्तिका छतरपुर

छतरपुर जिले की औसतन वार्षिक वर्षा

छतरपुर जिले मानसून दशतक जून मध्य से अक्टूबर तक आता है मध्य जून से हवाएँ जिले की उत्तरी भाग में पूर्व की ओर से दक्षिणी भाग में पश्चिम की ओर से चलने लगती है जिससे जिले में वर्षा प्रारम्भ हो जाता है।

सारणी क्र. 2 : औसत वार्षिक वर्षा (मि.मी.)

जिला / तहसील / विकासखण्ड	2014–15	2015–16	2016–17
जिला छतरपुर	1636.6	777.1	1439.5
तहसील गौरिहार	1395.6	950.0	1316.9
विकासखण्ड गौरिहार	1395.0	950.0	1316.9
तहसील लवकुशनगर (तह. चंदला सहित)	1516.0	664.0	1400.0
विकासखण्ड लवकुशनगर	1516.0	664.0	1400.0
तहसील नौगांव (तह. महाराजपुर सहित)	1612.4	623.0	1161.6
विकासखण्ड नौगांव	1612.4	623.0	1161.1
तहसील छतरपुर	1582.6	731.8	1317.9
विकासखण्ड छतरपुर	1582.6	731.8	1317.9
तहसील राजनगर	1730.6	765.6	1541.9
विकासखण्ड राजनगर	1730.6	765.6	1541.9
तहसील बिजावर	1836.0	814.1	1420.9
विकासखण्ड बिजावर	1836.0	814.1	1420.9
तहसील बक्स्वाहा	1463.2	780.6	1759.8
विकासखण्ड बक्स्वाहा	1463.2	780.6	1759.8
तहसील बडामलहरा	1957.0	887.2	1596.8
विकास खण्ड बड़ामलहरा	1957.0	887.2	1596.8

स्त्रोतः अधीक्षक भू–अभिलेख जिला छतरपुर (म.प्र.)

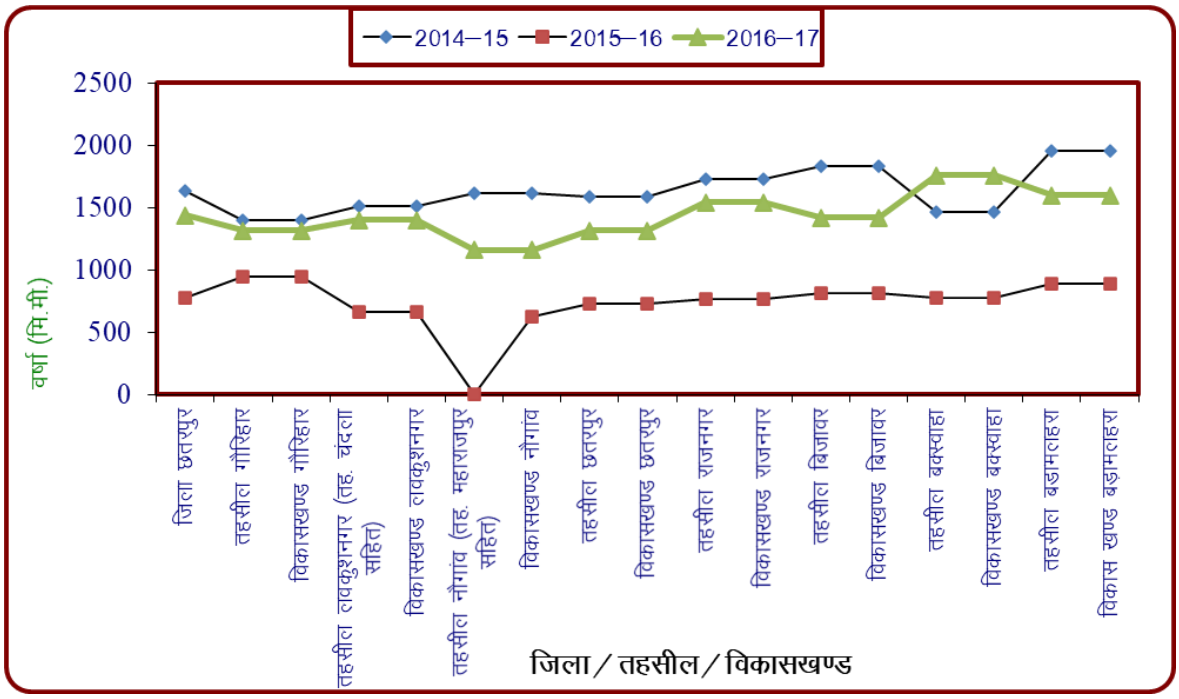

आरेख क्र. 1: औसत वार्षिक वर्षा (मि.मी.)

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में जल संसाधन का बहुत ही अभाव है यदि जल का विदोहन इसी प्रकार होता रहा तो भविष्य में जल स्तर निम्न बिन्दु पर आ जायेगा। यहाँ मानव विकास की प्रक्रिया समाप्त हो जायेगी। यद्यपि सन् 2001 से जल स्तर सामान्य था परन्तु 2017 के अनुसार जल स्तर बहुत निम्नबिन्दु पर आ गया है हम सब को जल संरक्षण एवं पेड़ पौधों का अत्यधिक लगाना चाहिए, जिससे जल संसाधन का अभाव खत्म हो जायेगा।

संदर्भ

1. Tiwari C.P., water resources in Rewa Destrict UGC Project Work 1998.
2. तिवारी, सी.पी., रीवा जिले के सतही जलसंसाधन क्षमता एवं प्रबन्धन, उत्तर भारत भूगोल पत्रिका गोरखपुर.
3. वर्मा, एस.बी., ग्रामीण जल प्रबन्धन, यूनिवर्सिटी प्रकाषन दरियागंज नई दिल्ली 2011.
4. राजपूत, बी.एस., पन्ना छतरपुर एवं टीकमगढ़ की भूमि उपयोग, अ.प्र.सिंह वि.वि रीवा.
5. कृश्ण कुमार मिश्र, जल संसाधन प्रबन्ध 2003.
6. Reford UR 19763-74.